thearyasamaj.org

संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : ११६ ● अंक : ४५ ● ०२ दिसम्बर, २०१४ मार्ग शीर्ष शुक्ल एकादशी सम्वत् २०७१ ● दयानन्दाब्द १६० वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११५

राष्ट्र को भ्रष्टाचार मुक्त बनाने के लिए आर्य समाज आन्दोलन की तीव्र आवश्यकता है।

-देवेन्द्रपाल वर्मा

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा ने प्रदेश के सभी आर्य नर नारियों के नाम प्रेषित सन्देश में कहा है कि आज हमारा राष्ट्र विघटन के कगार पर है। आसुरी शक्तियां विभिन्न रूपों में राष्ट्र पर आक्रमण कर रही हैं। भ्रष्टाचार, अनाचार, नारी शोषण, ढोंग पाखण्ड, अंध विश्वास चरम पर है। कुछ ढोंगी धर्म के नाम पर सन्त का जामा ओढ़कर जन मानस को ठग रहे हैं। जनता जनार्दन अन्ध विश्वास के वशीभूत उनके चंगुल में फंसती है और ठगी जाती है। कुछ राजनेता धर्म और राजनीति का मर्म न जानने के कारण पूजा पद्धति को धर्म कहकर राजनीति को उससे अलग कहकर मनमानी राजनीति की व्याख्या करते हैं। कुछ हिन्दू मुस्लिम का विभेद मनमानी ढंग से प्रस्तुत करके साम्प्रदायिक द्वेष को बढ़ाने में सहायक बनते हैं। तो कुछ भोगवादी जीवन वृत्ति के लिए धनार्जन के सही गलत सभी उपायों का प्रयोग करके भ्रष्टाचार बढा रहे है। आज नारी पढ़ी लिखी तो खूब है परन्तु पहले से अधिक शोषित व प्रताड़ित है और अपने को असुरक्षित महसूस कर रही है।

महर्षि दयानन्द ने सन् 1875 में जब हमारा देश अंग्रेजों की पराधीनता से त्रस्त था-आर्य समाज की स्थापना की थी और इसे आन्दोलन नाम दिया था। पराधीनता के मूल के सभी कारणों नारी उत्पीड़न, अशिक्षा, अंध विश्वास, ढोंग पाखण्ड, भ्रष्टाचार अनाचार का गहन अध्ययन करके उनके विरूद्ध उद्घोष किया था व प्रबल आवाज उठायी थी और कहा था कि आर्य समाज कोई मत या सम्प्रदाय नहीं है यह आन्दोलन है-पराधीनता के मूल में आये सभी विकारों ढोंग पाखण्ड, नारी उत्पीड़न, अशिक्षा जातिगत विभेद भ्रष्टाचार अनाचार से देश को मुक्त कराकर सुखी स्वाधीन स्वराष्ट्र बनाने के लिए-हमेशा चलाते रहना है। यह कभी भी शिथिल नहीं होना चाहिए। आजादी की प्राप्ति तक यह आन्दोलन तीव्र गति से चला। आजादी के बाद यह समझा गया कि अब हम आजाद है सरकार सभी विकारों से राष्ट्र को मुक्त रखेगी परंतु ऐसा हो न सका। सरकार भौतिक समृद्धि में जुट गयी, शिक्षा व्यवस्था विदेशी होने के कारण नैतिकता का उत्तरोत्तर क्षरण होने लगा। आज सभी बुराइयां पहले से भी ज्यादा नये नये कलेवर में उत्पन्न हो रही है और राष्ट्र टूटने की दहलीज पर खड़ा है।

महर्षि दयानन्द का सारी आर्य जाति पर बहुत बड़ा ऋण हैं उसे हमें चुकाकर भारत को विश्व गुरू पद पर प्रतिष्ठापित करना है। इसलिए सभी आर्यजन जागें, सचेत हों और आर्य समाज आन्दोलन को तीव्र गति से चलाने के लिए अपने अन्दर आये आलस्य प्रमाद, बैर विरोध के भाव का सर्वथा परित्याग करके सावधान हो जाये। निश्चय ही हमारे ऐसे दृढ़ संकल्प से आन्दोलन में तीव्र गति आयेगी और उसके तीव्र गति से चलने से राष्ट्र में फैलती सभी बुराइयां ध्वस्त होंगी और हमारा स्वाधीन राष्ट्र सर्व सुख समृद्धि से पूर्ण हो सम्पूर्ण विश्व का मार्ग दर्शक बनेगा।

आर्य समाज राजनगर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज राजनगर गाजियाबाद एवं महिला आर्य समाज का 30वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 1 से 7 दिसम्बर 14 तक आयोजित किया गया है। जिसमें वैदिक विद्वान डा. सोमदेव शास्त्री बम्बई की अध्यक्षता में यजुर्वेदीय महायज्ञ प्रातः 7:30 बजे से 10:30 बजे तक होगा। कन्या गुरूकुल सासनी की ब्रह्मचाणियों द्वारा वेद पाठ होगा। 1 से 3 दिसम्बर तक प्रतिदिन सायं 3:00 बजे से 5 बजे तक वेदोपदेश डा. सोमदेव जी के एवं भजन श्री कुलदीप आर्य बिजनौर के होंगे। दिनांक 4.12.14 को प्रातः 7:30 से 10:30 तक यज्ञ उपदेश व भजन के बाद 10:45 से नवीं कक्षा से 12वीं कक्षा के छात्र व छात्राओं की अन्तर विद्यालय भाषण प्रतियोगिता होगी। इस प्रतियोगिता के अध्यक्ष डा. बी.बी.सिंह पूर्व प्राचार्य एम.एम.एल. स्नातकोत्तर कालेज होंगे तथा संचालन श्री सत्यवीर चौधरी करेंगे। सायं 3 से 5:30 बजे तक समाज सुधार सम्मेलन होगा, जिसकी अध्यक्षता श्री जयपाल सिंह आर्य, पूर्व प्रधान जिला सभा, गाजियाबाद होंगे। उद्बोधन डा. सोमदेव शास्त्री, आचार्य चन्द्रपाल शास्त्री वैदिक प्रवक्ता के होंगे। भजन श्री कुलदीप आर्य के होंगे। संचालन श्री लक्ष्मण शर्मा जिज्ञासु करेंगे। 5 दिसम्बर प्रातः 7:30 से 11:30 तक यज्ञ भजन व उपदेश डा. सोमदेव शास्त्री व वागीश आचार्य प्राचार्य गुरूकुल एटा के व कुलदीप आर्य के होंगे। 11 बजे ध्वाजारोहण श्री मायाप्रकाश त्यागी कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा करेंगे। संयोजक श्री शिवराज त्यागी होंगे। सायं 3 से 5:30 बजे तक वेद सम्मेलन होगा। जिसकी अध्यक्षता डा. गोपाल दत्त शर्मा पूर्व प्राचार्य लाजपत राय स्नातकोत्तर कालेज करेंगे। संचालन श्री मगन सिंह त्यागी करेंगे उद्बोधन डा. सोमदेव शास्त्री व भजन कुलदीप आर्य के होंगे।

दिनांक 6 दिसम्बर प्रातः 7:30 से 11 बजे तक यज्ञ व आध्यात्मिक सम्मेलन होगा जिसकी अध्यक्षता डा. वीरपाल विद्यालंकार, पूर्व प्राचार्य करेंगे। उपदेश व भजन डा. सोमदेव शास्त्री, डा. वागीश आचार्य, कुलदीप आर्य व संचालन श्री सुरेश कुमार आर्य करेंगे।

अपराह्न 2:30 बजे से 5:30 बजे तक महिला सम्मेलन होगा। जिसकी अध्यक्षता डॉ. प्रतिभा सिंह वैदिक प्रवक्ता विशिष्ट अतिथि श्रीमती विभा रावत उद्बोधक डॉ. संगम देव शास्त्री, डॉत्र बागीश आचार्य भजन श्री कुलदीप आर्य के होंगे। संचालक श्रीमती कौशल गुप्ता करेंगी। 7 दिसम्बर को प्रातः 8 से 10 बजे तक यजुर्वेदीय महायज्ञ की पूर्णाहूति व आशीर्वाद व प्रसाद वितरण होगा। 10 से 1:30 बजे तक राष्ट्र रक्षा सम्मेलन होगा सम्मेलन की अध्यक्षता श्री देवेन्द्रपाल वर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. करेंगे। मुख्य अतिथि डॉ. सत्यपाल सिंह सदस्य लोक सभा, विशिष्ट अतिथि श्री तेलू राम कम्बोज महापौर गाजियाबाद श्री राजेन्द्र त्यागी पार्षद नगर निगम गाजियाबाद, स्वागताध्यक्षर श्री ओम प्रकाश आर्य होंगे। उद्बोधन डॉ. सोमदेव शास्त्री डॉ. बागीश आचार्य भजन कुलदीप आर्य के होंगे। संचालन श्री सत्यवीर आर्य करेंगे।

श्रद्धानन्द शर्मा, प्रधान

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

समाजवादी नेता श्री मुलायम सिंह की 75वीं वर्षगांठ पर उन्हें शाही बग्घी में बैठाकर घुमाना सामन्ती सोच है

समाजवादी पार्टी के संस्थापक माननीय मुलायम सिंह जी की 75वीं वर्षगांठ दिनांक 22-11-14 को हुयी। मेरी व आर्यमित्र परिवार की ओर से श्री मुलायम सिंह को शतशः बधाइयां।

इसी उपलक्ष्य में दिनांक 21-11-14 को रामपुर में एक शाही अन्दाज में समारोह आयोजित किया गया और उन्हें एक विदेशी शाही बग्घी में बैठाकर शहर में घुमाकर कार्यस्थल पर ले जाया गया। ऐसे प्रसन्नता के आयोजन सभी नेताओं के सुह्रदजन अपने अपने स्तर पर करते हैं। परन्तु रामपुर का यह आयोजन उनकी प्रतिभा के अनुरूप नही सामन्ती सोच का रहा। मुलायम सिंह जी जमीनी नेता हैं जन सामान्य में समाजवादी विचारधारा के धुरन्धर प्रचारक रहे है और उनकी छवि जन सामान्य में इसी कारण सम्माननीय है।

वे भारतीय वेशभूषा एवं हिन्दी के प्रबल समर्थक है। परन्तु रामपुर के समारोह में जन्मदिवस पर केक काटना और प्रशंसकों द्वारा हैप्पी बर्थ डे टू यू कहना, भारतीय परम्परा के सर्वथा विपरीत है। भारतीय परम्परा में जन्मोत्सव का अर्थ पिछले वर्ष के कार्यो की समीक्षा बैलेंस शीट एवं अगले वर्ष के कार्यक्रमों का अनुमानित बजट बनाना है। परंतु विदेशी परम्परा में जन्मोत्सव मात्र खुशियों का त्योहार बनकर रहता है।

आज हमारा दुर्भाग्य है हमारे देश में जन्मोत्सव की परम्परा लुप्त होती जा रही है और बर्थ डे मनाने का चलन चालू हो गया है। इसी से आज हमारे बच्चों में भोगवादी जीवन शैली बनती जा रही है। और चारित्रिक जीवन शैली घटती जा रही है। छोटों पर बड़ों की छाप पड़ती है इसीलिए वैदिक दर्शन में माता पिता को तप द्वारा सन्तान के निर्माण का मार्गदर्शन दिया गया है।

देश के राजनेता देश के नागरिकों के मार्गदर्शक होते हैं। उन्हें अपने कार्यो व्यवहार वक्तव्यों में बहुत सावधानी की अपेक्षा रहती है। हिन्दी के प्रबल समर्थक मुलायम सिंह के जन्मोत्सव पर उन्हें अंग्रेजी परम्परा व शब्दों में बधाई देना उनका सम्मान नहीं है। वे समाजवादी नेता है, उनका सम्मान शाही बग्घी में बैठाकर ले चलने में नहीं है। उनका सम्मान तो उनके समाजवादी आदर्श को जन जन में अपने मनों व व्यवहार में उतारने से होगा। मुलायम सिंह जी को ऐसे आयोजनों में जाने से बचना चाहिए। उनके सम्मान में खर्च के संबंध में किसी पत्रकार ने प्रदेश के मंत्री श्री आजम खां से पूछा तो उनका उत्तर दाउद का है अबू सलेम का है आदि उनके पद की मर्यादा के अनुरूप नहीं है। उन्हें भी अपने बोलने में मर्यादा का ध्यान रखना चाहिए।

वे कोई सामान्य नागरिक नहीं प्रदेश के नेता और मंत्री है, अतः कुछ भी बोलने से पहले भली प्रकार सोच कर बोलना चाहिए। ताकि उनकी छवि धूमिल न हो।

आशा है श्री मुलायम सिंह जी और आजम खाँ जी इस पर गम्भीरता से चिन्तन करेंगे।

सम्पादक

आर्य समाज गांधी रोड खुर्जा में डा. धीरज सिंह का भव्य स्वागत

सर्वोच्च न्यायालय ने आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के विवादों पर उच्च न्यायालय लखनऊ खण्ड पीठ की डबल बेंच के निर्णय को सही माना। निर्णय के अनुसार आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान-श्री देवेन्द्र पाल वर्मा, मंत्री-स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, कोषाध्यक्ष-डॉ. धीरज सिंह मान्य हुये।

आर्य समाज गांधी रोड, खुर्जा में डा. धीरज सिंह के पहुंचने पर आर्य समाज के अधिकारियों व सदस्यों ने माल्यार्पण कर उनका स्वागत किया। डॉ. धीरज सिंह ने अपने सम्बोधन में कहा कि हम सभी को महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तों को अपने जीवन में उतार कर देश को सर्वोच्च शिखर पर पहुंचाना है। इस मौके पर आर्य समाज के मंत्री श्री जमुना प्रताप गौतम, श्री राजपाल वर्मा श्री रमेश पाल सिंह, श्री राजेन्द्र कौशिक, श्री गजेन्द्र सिंह, श्री राम स्वरूप आर्य, श्री घनश्याम दास सक्सेना, श्री दिनेश आर्य आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय है।

सम्वाददाता

रामपाल जैसे ढोंगी समाज का कलंक

हरियाणा के हिसार में रामपाल जूनियर इंजीनियर ने नौकरी छोड़कर सतलोक नाम से एक आश्रम खोला जिसमें त्राटक से सम्मोहन की प्रक्रिया का अभ्यास करके सन्त के वेष में जन सामान्य को ठगने का काम प्रारम्भ किया अपने को भगवान कहलाना आरम्भ किया। वर्ष 2006 में इसने महर्षि दयानन्द एवं सत्यार्थ प्रकाश पर हमला बोला था। अनर्गल आक्षेप करने प्रारम्भ किये थे जिससे हरियाणा की आर्य जनता में भारी रोष उत्पन्न हुआ। उन्होंने धरना प्रदर्शन आरम्भ किया तब रामपाल ने अपने गुर्गो से उन पर असलहों से हमला करा दिया। जिसमें एक व्यक्ति की मृत्यु भी हो गयी थी। इस पर रामपाल को गिरफ्तार भी किया गया, उस पर अभियोग न्यायालय में चला। आश्रम में ताला बन्द हो गया परंतु कुछ काल बाद आश्रम को खोल दिया गया और वह भी जमानत पर छूट गया। अभियोग चलता रहा परंतु वह ढीठ किसी भी पेशी में हाजिर नहीं हुआ। उसके लिए गैर जमानती वारन्ट जारी हुआ फिर भी वह हाजिर नहीं हुआ तो शासन ने उसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस तैनात की परन्तु उसके हजारो अन्धभक्त गुण्ड़ों ने पुलिस से लोहा लिया जिसमें कई लोग मर गये। पुलिस जवानों सहित कई लोग घायल हो गये। इस सब में हजारों पुलिस बल व करोड़ों रूपयों की हानि देश को हो गयी। अंततः पुलिस उसे उसके तहखाने से गिरफ्तार करने में सफल हो गयी। अब वह पुलिस रिमाण्ड पर 28 नवम्बर तक है।

रामपाल व आशाराम सरीखे अनार्य दस्यु कैसे पैदा होते हैं इस पर सारे समाज को गम्भीर चिन्तन करना है। मेरी दृष्टि में इसका एकमात्र कारण हमारे मन की अन्ध श्रद्धा है। श्रद्धा के बिना उपलब्धि नहीं हो सकती परंतु अन्ध श्रद्धा ऐसे ही समाज द्रोहियों को जन्म देती है। महर्षि दयानन्द ने अपने उपदेशों व ग्रंथों में अन्ध श्रद्धा का प्रबल विरोध किया है। परन्तु सरकार द्वारा संविधान में उल्लिखित मत निरपेक्ष के स्थान पर (मत व धर्म का अन्तर बिना जाने) धर्म निरपेक्ष कर दिया फलतः सभी सही गलत मत मतान्तर पुरजोर से धर्म के नाम पर फैल रहे है। ऐसे ढोंगी पाखण्डी राष्ट्रद्रोही साधुवेश में पनपने लगते हैं। महर्षि दयानन्द ने अन्धश्रद्धा का विरोध किया और श्रद्धावान् बनकर ज्ञानार्जन का सन्देश दिया था परन्तु आज अन्ध श्रद्धा जोर शोर से जन सामान्य में हावी है। आर्य समाज की जिम्मेदारी थी कि वह अन्ध श्रद्धा का प्रबल विरोध करता परन्तु वह अपने दायित्व निर्वाह में शिथिल सा है। आर्य समाज के प्रत्येक सदस्य को गहराई से इस पर विचार करके दायित्व का पूरी निष्ठा से निर्वहण करने के लिए सजग होना होगा। जन जन में श्रद्धा और अन्ध श्रद्धा का अन्तर समझाने के लिए कटिबद्ध होना होगा।

श्रद्धा के बिना प्राप्ति असम्भव है परंतु अंध श्रद्धा विकारों को जन्म देती है। यह सभी के मनों में भरना होगा। जब आर्य समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने इस दायित्व को स्वीकार करने का दृढ़ व्रती होगा तो निश्चय ही अन्ध श्रद्धा समाप्त होगी और श्रद्धा पनप सकेगी जिससे जन जन में सत्य असत्य की पहचान का विवेक बढ़ेगा और प्रत्येक मानव सत्य धर्म का पालन करने को संकल्पित होगा। हमारे सजग होने पर आर्य समाज आन्दोलन को गति मिलेगी समाज सुधार होगा और महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत बनने की राह खुलेगी।

सम्पादक

thearyasamaj.org

गौ दूध उत्पादों के सेवन का संकल्प करें हो जाएगा गौमाता का पालन

–अर्जुनदेव चड्ढा

गावो विश्वस्य मातरः अर्थात् गाय सभी की माता है। हम भारतवासियों में गाय के प्रति अगाध श्रद्धा है। हमारे मन में गाय के लिए एक अलग दैवीय भाव है, जहां संसार में अन्य लोगों के लिए यह एक पशु मात्र है, वहीं हमारे लिए हमारी धार्मिक सांस्कृतिक आस्था का केन्द्र है। इसका कारण है इसके द्वारा मानव मात्र का किया जाने वाला उपकार है। इसके उपकारी स्वरूप का वर्णन करते हुए वेदों ने इसे अघन्या कहा है। जिसका अर्थ है कभी भी नहीं मारने योग्य। केवल पालन एवं प्रेम करने योग्य। वेदों के इसी आदेश को भगवान श्रीकृष्ण ने अपने जीवन में उतारा और श्रेष्ठ गौ सेवक बनकर गोपाल गोविन्द आदि नाम से संसार में प्रसिद्ध हुए।

आज भी जब हम पूजा कथा, यज्ञ और सत्संग में जाते हैं तो वहां अन्त में गौ माता की जय हो का नारा अवश्य लगाते हैं। किंतु स्थिति इसके एकदम विपरीत है। नारे हम गौमाता की जय का लगाते हैं परंतु इसके अमृत तुल्य दूध को छोड़कर भैंस का दूध प्रयोग करना पसन्द करते हैं। यह जानते हुए भी गौ का दूध और उससे बने पदार्थ मानव शरीर के लिए जितने अनुकूल है उतने अन्य के नहीं। विश्व में भारत को छोड़कर दुनिया के किसी भी देश में भैंस का दूध उपयोग में नहीं लाया जाता है। गौमाता की रक्षा हो का जयघोष करने वालों के इस देश में गायों की दुर्दशा अकथनीय है।

शहर में सड़कों पर या इधर-उधर गलियों में भूखी प्यासी किसी गौमाता को हमने आवारा पशुओं की श्रेणी में पहुँचा दिया। क्या कृतघ्नता के इस पाप से हम कभी मुक्त हो सकते हैं। क्या हमारे गायों के प्रति इस प्रकार के अशोभनीय आचरण के लिए भगवान हमें माफ करेगा। शायद कभी नहीं। गौमाता को इस हाल में पहुँचाने से हम अपने आपको भगवान् श्री कृष्ण के भक्त कहलाने योग्य नहीं है।

गौमाता के प्रति यह मेरी श्रद्धा ही थी। युवावस्था में संस्कारी सेवा में रहते हुये भी सन् 1966 में गौ रक्षा आन्दोलन में सम्मिलित होने दिल्ली गया तथा उस समय पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। इस दौरान 3 दिन दिल्ली की तिहाड़ जेल में तथा 27 दिन पंजाब की नाभा जेल में रहा।

यद्यपि यह भी सत्य है कि आधुनिक बदलते परिवेश में हमारी जीवन शैली व रहन सहन में आमूलचूल परिवर्तन कर दिया है। आज के शहरी क्षेत्र में जहां रहने के लिए मकान कितनी बड़ी बात है वहां उनमें गौ पालन की सोचना मुश्किल है। प्रथम तो शहर के इन घरों में न तो इतनी जगह होती है कि उसमें गाय पाली जा सकें क्योंकि गोपालन मात्र गाय के लिए रहने के लिए स्थान की व्यवस्था कर देने से संभव नहीं है। अपितु साथ ही उसके लिए चारे पानी के लिए अपेक्षित स्थान जरूरी होता है। किसी प्रकार बड़े घरों में इन सबकी व्यवस्था हो जाये तो भी गोबर का निस्तारण एक दूसरी बड़ी समस्या है।

तो क्या इन विषम परिस्थितियों को आधार बनाकर हम गौ के प्रति अपने कर्तव्य से विमुख हो जायें और केवल गौ माता की जय के नारे लगाते रहें। क्या यह उचित होगा नहीं। नये युग की इन नई विषम परिस्थितियों के अनुरूप हमें अपनी सोच में थोड़ा सा परिवर्तन कर गौपालन के अपने कर्तव्य के प्रति नये नज़रिये से सोचना होगा।

दो वर्ष पहले मुझे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में कोटा संभाग के प्रतिनिधि के रूप में हॉलैण्ड जाने का मौका मिला। हॉलैण्ड जो विश्व का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक देश है। देखा कि वहां गांव या शहर के बाहर गोपालन केन्द्र बने हुए है जहां गोपालन किया जाता है। गाय की सभी सुविधाओं का ध्यान रखा जाता है। वैज्ञानिक ढंग से उनके चारे पानी की व्यवस्था की जाती है और वहां जो दुग्ध उत्पादन होता है उसका प्रयोग उस गांव या शहर के निवासी करते हैं और अतिरिक्त दूध अन्य व्यापारिक कार्यो में काम में लिया जाता है।

उनसे शिक्षा ग्रहण कर हमारे यहां भी शहरों में निश्चित क्षेत्रों में व्यवस्थित गोपालन केन्द्र बनाये जा सकते है। आप कहेंगे कि हमारे यहां भी गौशालाएं बनी हुई है किंतु सत्य यह है कि हमारे यहां गौशालाओं में जो गायें रहती है, उनसे दुग्ध उत्पादन नहीं होता है और इन गौशालाओं के संचालन में हमारी स्वयं की भागीदारी न के बराबर ही होती है। हॉलैंड से लौटकर आने पर गायों के प्रति अपने कर्तव्यों ने मुझे झकझोरा और एक नई सोच ने जन्म लिया। एक नया विचार पनपा। जहां पहले मेरे परिवार में जिस दूधवाले से दूध आता था वो भी भैंस का। मैंने देखा उसके पास 10-12 भैंस और केवल दो गायें हैं। दृढ़ संकल्प लिया और भैंस का दूध लेना बंद कर उसके स्थान पर गाय का दूध लेना प्रारम्भ कर दिया। जब मैं दूध लेने जाता था तो वहां आने वाले दूसरे लोगों को भी मैंने गाय के दूध की वैज्ञानिक गुणवत्ता से अवगत कराया साथ ही गोपालन के प्रति उनके धार्मिक कर्तव्य के प्रति समझाया तथा आधुनिक ढंग में हम उसे किस प्रकार निभा सकते हैं जानकारी दी तो परिवर्तन यह हुआ कि भैंस का दूध लेने वालों ने भैंस का दूध लेना बंद कर दिया और गाय का दूध लेना प्रारंभ कर दिया।

इसका परिणाम यह हुआ कि जिस दूधवाले के पास पहले केवल 2 गायें थीं और 10-12 भैंसे थी वहीं कुछ महीने बाद गायें 10-12 व भैंसे 2 हो गयी। और तो और उसने मुझे बताया कि इसमें कुछ गायें तो वो है जो सड़कों पर आवारा घूमा करती थीं, जिनका कोई मालिक नहीं था। मैंने उसे प्रण दिलाया कि दूध देना बंद कर देने के बाद भी वो इन गायों को फिर से आवारा खुली नहीं छोड़ेगा।

इस पूरी घटना को बताने का तात्पर्य केवल इतना ही है कि हम चाहें तो इस आधुनिक युग में भी अपने गौपालन के धार्मिक कर्तव्य का उसी प्रकार से पालन कर सकते है। बस जरूरत है तो नई सोच की और दृढ़ संकल्प की। यदि प्रत्येक व्यक्ति चाहे शहरी हो या ग्रामीण सोच लें कि मैं केवल गाय के दूध का उससे बने दही, घी, पनीर, मावा आदि का प्रयोग करूँगा तो निश्चित रूप से गायों की स्थिति में सुधार होगा। गौ दूध का प्रयोग करते समय यह माने कि मैं एक गौ का पालन कर रहा हूँ। दूध वाले भैंस के स्थान पर गायों का पालन प्रारम्भ कर देंगे। इससे सड़कों पर आवारा भूखी प्यासी मारी फिरती इन गौमाताओं की दशा में सुधार आयेगा। और सबसे बड़ी बात यदि कोई होगी तो वह होगी कि गौ सेवा और गौ रक्षा जो हमारा अनिवार्य कर्तव्य है उस ओर यह हमारा एक सार्थक कदम होगा। पाठकों मैं अन्त में राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त के शब्दों में अपनी बात कहकर विराम देना चाहूँगा-

"दांतो तले तृण दाबकर ये दीन गायें कह रही,
हम पशु तथा तुम हो मनुज पर योग्य क्या तुमको यही!

विज्ञान नगर, कोटा

जनपदीय आर्य महा सम्मेलन

सोरों, जनपद-कासगंज

आर्य उप प्रतिनिधि सभा कासगंज का भव्य द्वितीय वार्षिकोत्सव दिनांक 2,3,4,5,6 दिसम्बर, 2014 को जनपदीय आर्य महा सम्मेलन के रूप में मनाया जा रहा है जिसमें उच्च कोटि के विद्वान, आर्य नेता मा. श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. लखनऊ, डॉ. राम प्रकाश वर्णी, प्रोफेसर-लोक राष्ट्रीय महाविद्यालय, जसराना, फिरोजाबाद, श्री देवराज शास्त्री, आर्ष गुरुकुल, एटा, पूज्य स्वामी महामुनी जी महाराज, आर्य समाज, सोरों, कासगंज, मा. वेद मुनी जी, आर्य समाज, अमांपुर, कासगंज, श्री स्वामी शिवानन्द जी, वैदिक आश्रम, प्रहलादपुर, कासगंज, श्री अभय देव शास्त्री, गुरुकुल नगला कटीला, कासगंज, श्री रामस्वरूप जी आर्य, आर्य समाज, एटा, श्री रघुनाथ देव वैदिक भूषण, आर्य समाज, लड़सिया, एटा, श्री सुखराम सिंह आर्य, वैदिक संस्कृत मा. विद्यालय, सिरौली, कासगंज, श्री शंकर मित्र वेदालंकार, नगला सोती, कासगंज, श्रीमती पुष्पा रानी आर्या, महिला आर्य समाज, कासगंज, श्री सुरेश चन्द्र शास्त्री, आर्य समाज, एटा, श्री शिवपाल आर्य, आर्य समाज, लड़सिया, एटा, श्री सत्येन्द्र आर्य, आर्य समाज, एटा के उपदेशों व भजनों का लाभ मिलेगा।

संयोजक-
आर्य उप प्रतिनिधि सभा एवं समस्त आर्य समाजें,

त्रिदिवसीय धर्म जागृति महोत्सव सम्पन्न

अफजलगढ़ (बिजनौर) आर्य समाज का त्रिदिवसीय धर्म जागृति महोत्सव 31 अक्टूबर से 2 नवम्बर तक डा. अशोक रस्तोगी के कुशल संचालन में सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान आचार्य संजय याज्ञिक, पं. घनश्याम प्रेमी, भूपेन्द्र आर्य व पं. विक्रमदेव आर्य ने भटकती युवा पीढ़ी, सत्संग, ईश्वरोपासना, मद्यमांस निषेध, कन्याभ्रूण संरक्षण, शिशु संस्कार, नारी जागृति आदि विषयों पर भजनोपदेश व व्याख्यान प्रस्तुत किये।

–डॉ. अशोक रस्तोगी
अफजलगढ़
(बिजनौर)

thearyasamaj.org

ईश्वर, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

मनमोहन कुमार आर्य

19 मई 2014 को अपने संस्थान में प्रौद्योगिकी दिवस कार्यक्रम में बैठे हुए मन में उपर्युक्त लेख लिखने का विचार आया। विज्ञान व प्रौद्योगिकी में परस्पर गहरा सम्बन्ध है अर्थात् ये अन्योन्याश्रित हैं। दोनों एक दूसरे के पूरक भी है। पहले विज्ञान को लेते हैं। विज्ञान इस सृष्टि के पदार्थो का सूक्ष्म अध्ययन कर नए तथ्यों को सामने लाता है। वह पदार्थ के अस्तित्व, उसके गुण व स्वभाव, प्रवृत्ति, स्वरूप, आकार या अन्य पदार्थो के प्रति उसमें क्रिया की प्रवृत्ति आदि अन्यान्य सभी विषयों पर विचार करता है, प्रयोगशाला में प्रयोग व अध्ययन करता है और सभी तत्वों को आलेखित कर प्रस्तुत करता है। पदार्थो के सबसे छोटे या सूक्ष्म कण, परमाणु व अणु का अध्ययन व उसके स्वरूप व गुणों एवं प्रकृति का ज्ञान भी विज्ञान के अध्ययन क्षेत्र में आता है। भौतिक पदार्थो में अनेक नियम कार्य करते हैं जिनका जन साधारण को ज्ञान नहीं होता। घनत्व, गुरूत्वाकर्षण, गति व स्थिति के नियम और उनमें गणितीय सम्बन्ध संयोजकता आदि आदि कुछ भौतिक बातें हैं जिन पर विज्ञान खड़ा है। हमारे वैज्ञानिकों ने जो अध्ययन अब तक किया है, उससे आधुनिक विज्ञान व उसके नियम, ज्ञान व नाना प्रकार के नए तथ्यों का उद्घाटन हुआ है। जो कार्य विगत दो-तीन शताब्दी में लोगों ने विज्ञान के क्षेत्र में किया है, उसे यदि उससे पूर्व के लोग भी मिल कर या पृथक-पृथक करते तो वहीं परिणाम सामने आते जो कि आज आए हैं।

विज्ञान के बाद प्रौद्योगिकी का स्थान आता है। प्रौद्योगिकी एक प्रकार के विज्ञान का कार्य, उसका क्रियात्मक रूप है। विज्ञान है तो प्रौद्योगिकी है। यदि न हो तो प्रौद्योगिकी भी अस्तित्व में नहीं आ सकती। प्रौद्योगिकी को इस प्रकार से समझ सकते हैं कि हम जिस वस्तु की आवश्यकता अनुभव करते हैं, उसका निर्माण, अनुसंधान व आविष्कार वैज्ञानिक ज्ञान के प्रयोगों को करके पूरा करते हैं। प्रौद्योगिकी, विज्ञान व उत्पाद के बीच एक प्रकार की वैज्ञानिक प्रक्रिया है जो उस उत्पाद के निर्माण में विज्ञान के नियमों, सिद्धान्तों व जानकारी आदि का उपयोग करके अस्तित्व में लाई जाती है। हमने एक वैज्ञानिक संस्थान भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून में लगभग 34 वर्ष कार्य किया है। विज्ञान व प्रौद्योगिकी के विकास, निर्माण व उसके क्रियान्वयन व उपयोग आदि कार्यो में हमें सहयोग करने का अवसर मिला है। अनेक प्रौद्योगिकियों के विकास कार्यो में जो प्रोजेक्ट कहे जाते हैं, के साथ साथ विकसित प्रौद्योगिकी को या प्रौद्योगिकी में सुधार व संशोधन आदि वैज्ञानिक कार्यो को

उद्योग में स्थापित कर उत्पादन के कार्य को आरम्भ करने में हमारी छोटी सी भूमिका रही है। इस कारण हम इससे जुड़े प्रश्नों को समझ सकें है। एक उदाहरण के रूप में हम बताना चाहते हैं कि हमारे संस्थान के वैज्ञानिकों ने सल्फोलेन नाम की एक प्रौद्योगिकी विकसित की। यह सल्फोलेन रिफाइनरी उद्योग अनेक क्षेत्रों में प्रयोग में लाई जाती है। जब यह विकसित हो गई तो इसे उद्योग में पहुँचाना था। प्रयास किए गए, एक उद्योग सामने आया, जिसने आवश्यकता के अनुरूप संयंत्र स्थापित किया। इस उद्योग ने इस इस तकनीकी ज्ञान व प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर उत्पाद बनाया और देश-विदेश में उसका विक्रय किया। आज भी उसी प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर उत्पाद बन रहा है और देश व विदेश में उपभोक्ता उसका उपयोग कर रहे हैं। ऐसे अनेक विकास कार्य हुए जिनसे प्रौद्योगिकी विकसित हुई और उनसे देश व नागरिकों को लाभ हो रहा है। इस प्रकार से अपने लक्ष्यों को निर्धारित कर विज्ञान के नियमों का प्रयोग करते हुए प्रौद्योगिकी विकास या निर्माण का कार्य किया जाता है और बार-बार प्रयोग करने पर वही पदार्थ एक जैसा व एक समान रूप में बनता है, तो माना जाता है कि प्रौद्योगिकी अस्तित्व में आ गई है। इसी प्रकार से विभिन्न क्षेत्रों में नाना प्रकार के उत्पाद, भिन्न-भिन्न प्रौद्योगिकियों की सहायता से अस्तित्व में आ रहे हैं। यह अब हमें देखना है कि विज्ञान व प्रौद्योगिकी में ईश्वर की क्या भूमिका है। हम पहले निष्कर्ष बता कर उसकी व्याख्या करेंगे। निष्कर्ष में हम कहना चाहेंगे कि ईश्वर विज्ञान व प्रौद्योगिकी का मूल आधार है। ईश्वर है तो विज्ञान व प्रौद्योगिकी है, यदि वह न हो और सहयोग न करे, तो विज्ञान व प्रौद्योगिकी अस्तित्व में आ ही नहीं सकती, कैसे? यह सृष्टि या ब्रह्माण्ड 1,96,08,53,114 वर्ष पूर्व बना है। इससे पूर्व सृष्टि निर्माण की प्रक्रिया चली जो 2,59,20,000 वर्ष में पूर्ण हुई। इस प्रक्रिया के आरम्भ होने से पूर्व यह सृष्टि अपनी कारणावस्था अर्थात् प्रलय अवस्था में थी। प्रलय अवस्था में निर्मित सृष्टि = कार्य प्रकृति अपनी कारण अवस्था= मूल प्रकृति की अवस्था में होती है। मूल प्रकृति, यदि वैज्ञानिक भाषा में कहें तो इलेक्ट्रान, प्रोटान व न्यूट्रान आदि कणों या इससे भी पूर्व की अवस्था है। ईश्वर का अपना नियम है कि वह 4.32 अरब वर्ष के लि सृष्टि रचकर उसका धारण पालन करता है व इतनी ही अवधि तक प्रलय करता है व उसे असृष्ट रखता है। अनन्त काल से यही क्रम चला आ रहा है और आगे भी अनन्त काल तक ऐसा ही होगा। सृष्टि को रचने व पालन करने तथा प्रलय करने वाला ईश्वर एक सत्य, चेतन व आनन्द स्वरूप सत्ता है जो सर्वज्ञ, अविनाशी, अजन्मा, नित्य, सर्वशक्तिमान, निराकार, सूक्ष्मातिसूक्ष्म निरवयव, समरस व सर्वत्र एक समान अविभाज्य, सर्ववेशी, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी आदि स्वरूप वाली सत्ता है। ईश्वर के अनन्त गुण, कर्म व स्वभाव है। उसका ज्ञान पूर्ण व सर्वोत्तम, न्यूनतारहित, ज्ञान की पराकाष्ठा प्रकार का है। यह प्रलय के पश्चात सर्वप्रथम मूल व कारण प्रकृति से इलेक्ट्रान, प्रोटोन व न्यूट्रान बनाता है। इनके परमाणु व परमाणुओं के समूह व संयोग से अणु बनता है। ईश्वर ने इस सृष्टि को बनाने से पूर्व भी असंख्य व अनन्त बार सृष्टियों को बनाया व चलाया है व उन सबकी प्रलय की है। उसका ज्ञान न्यूनाधिक अर्थात् घटता बढ़ता है और इससे पृथिवी, चन्द्र, सूर्य, ग्रह, उपग्रहादि ब्रह्माण्ड आदि व पृथिवीस्थ सभी पदार्थ अस्तित्व में आते हैं। इस सृष्टि के निर्माण में ईश्वर ने विज्ञान व अनेक प्रौद्योगिकियों का प्रयोग किया है। इस प्रकार से यह सृष्टि की रचना करता है। सांख्य दर्शन के अनुसार सृष्टि की रचना, उत्पत्ति या निर्माण में कारण प्रकृति का पहला विकास बुद्धि, उससे पांच तन्मात्रा सूक्ष्मभूत और इन्द्रियाँ तथा ग्यारहवाँ मन, पाँच तन्मात्राओं से पृथिव्यादि पाँच भूत ये चौबीस और पच्चीसवाँ पुरूष अर्थात् जीवन और परमेश्वर है (स्वामी दयानन्द सरस्वती)। ईश्वर के सृष्टि के रचयिता होने के कारण उसे इसको बनाने, धारण करने व इसे चलाने में प्रयोग में आने वाले समस्त विज्ञान व सभी प्रौद्योगिकियों का पूर्ण ज्ञान है। उसने इनके निर्माण में अपने पूर्ण ज्ञान व तकनीकी व प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया है। मनुष्य व अन्य प्राणियों को भी उसने ही बनाया है। इस कारण मनुष्य के पास बुद्धि, मन, हृदय, चित्त, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ व पाँच कर्मेन्द्रियाँ आदि जो भी ज्ञान ग्राही यन्त्र व उपकरण है, वह उस ईश्वर की ही देन है। मनुष्य के हृदय व बुद्धि में प्रेरणा द्वारा यह ज्ञान आदि देता रहता है। इस प्रकार से वैज्ञानिकों ने विज्ञान के जिस नियमों सिद्धान्तों व पदार्थो व उनके ज्ञान की खोजें की हैं वह ईश्वर के ज्ञान, नियम व सिद्धान्तों की ही खोज हैं। संसार की रचना करने, उसे धारण करने व चलाने तथा सभी प्राणियों को उनके प्रारब्ध के अनुसार विभिन्न प्राणी योनियों में जन्म देने, मनुष्यों की वृद्धि में सत्यासत्य व ज्ञान की प्रेरणा करने आदि के कारण सभी ज्ञान, विज्ञान व प्रौद्योगिकी का मूल आधार वही सिद्ध होता है। वैज्ञानिक तो केवल अध्ययन, चिन्तन मनन व ध्यान तथा प्रयोगों द्वारा इस सृष्टि व उनके पदार्थो का अध्ययन मात्र ही करता है। इसमें सिद्धि ईश्वर के सहयोग से मिलती है। इस प्रकार से ज्ञान, विज्ञान, प्रौद्योगिकी आदि का रचयिता व मूलाधार परमेश्वर सिद्ध है। प्रत्येक वैज्ञानिक को इन तथ्यों को जानना व मानना चाहिए। यदि कोई ईश्वर को नहीं जानता व मानता है तो वह ईश्वर के प्रति कृतध्नता करता है जो कि महापाप है। इस विवेचन से ईश्वर इस सृष्टि व इसके सभी पदार्थो का रचयिता, जन्मदाता, पालक, रक्षक, जीवों के कर्मो का फल प्रदाता आदि सिद्ध होता है।

इस लेख को विराम देने से पूर्व हम यह भी कहना चाहते है कि आज विज्ञान ने जितनी खोजें की है व नए-नए उत्पाद बनायें है, उनसे मनुष्यों का जीवन बहुत अधिक सुखदायी हो गया है। इससे जीवन में आलस्य में वृद्धि हुई हैं और यह ईश्वर को जानने व उसकी उपासना करने से किंचित विमुख हुआ है। विज्ञान व प्रौद्योगिकी यद्यपि अपने आप में अच्छे हैं परन्तु इसके परिणाम से उत्पन्न सुविधाजनक वस्तुओं के अत्यधिक प्रयोग ने मनुष्यों को ईश्वर उपासना से दूर कर दिया है। जिससे हम जीवन के लक्ष्य को भूल कर भटकाव की स्थिति में है। विज्ञान व प्रौद्योगिकी से असंख्य लाभ है परन्तु हमें इनमें से उन्हीं को चुनना है जिनसे हमारा आध्यात्मिक जीवन व उपासना कुप्रभावित न हो। इसका ध्यान रखेंगे तो लाभ में रहेंगे अन्यथा लक्ष्य की पूर्ति न होने व उसके विमुख हो जाने से भारी हानि होने वाली है। अन्त में हम यह कहेंगे कि ईश्वर-विज्ञान-प्रौद्योगिकी-ईश्वर परस्पर एक दूसरे के पूरक हैं। इनमें परस्पर किसी प्रकार का विरोध नहीं है। इस यथार्थ को हमें समझना है और विज्ञान व प्रौद्योगिकी की अधिकाधिक उन्नति करनी है जिससे देश व विश्व के लोगों का जीवन स्तर सुधर सकें और वह आनन्द से अपनी आयु पूरी कर सकें। सृष्टि के निर्माण के सम्बन्ध में अधिक व हृदय का मान्य जानकारी के लिए हम पाठकों को सत्यार्थ प्रकार का आठवाँ समुल्लास पढ़ने का निवेदन करते हैं।

196, चुक्खूवाला-2
देहरादून-248001
दूरभाष- 09412985121

thearyasamaj.org

विश्व संगठन के वैदिक आधार- मैत्री और समता

प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

पश्चिमी देशों में सामाजिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का आधार रहा है। डार्विन के विकासवाद का सिद्धान्त -'योग्यतम की जीत का अर्थ लगाया जाता है जो बलवान हो, संघर्ष में जीत जाये, वही संसार में टिकता है। उदाहरण देते हैं छोटी मछली को बड़ी मछली खा जाती है और बड़ी मछली का राज होता है। जंगल में शेर आदि निर्बल जानवरों को खाकर जंगल पर राज करते हैं। शेर जंगल का राजा कहा ही जाता है। यही सिद्धान्त मानव समाज में भी लागू होता है।

पश्चिमी देशों के इस चिन्तन का सबसे बड़ा दोष यह है कि योग्यतम की जीत का यह सिद्धान्त पशु पर तो लग सकता है किन्तु मनुष्य समाज पर यह सिद्धान्त लागू नहीं होता। मनुष्य विवेकवान, विचारशील प्राणी है। मनुष्य के लिए उसके स्वभाव में है न्याय, सत्य, स्नेह, प्रेम, श्रद्धा। मनुष्य अपने स्वभाव से असत्य और क्रूरता से दूर रहता है। सत्य परोपकार दूसरों की भलाई पर मनुष्य को श्रद्धा होती है। परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया ही ऐसा है- ''अश्रद्धामनृत्ते दधात् श्रद्धां सत्ये प्रजापतिः।''

अर्थात् परमेश्वर ने संसार में असत्य, क्रूरता, दुष्टता इत्यादि को और सत्य, करूणा, सज्जनता इत्यादि दोनों तरह के कार्यो को पाया। वेद का मंत्र यह कहता है कि परमेश्वर ने मनुष्य के हृदय में सत्य, करूणा, दया आदि के प्रति श्रद्धा पैदा कर दी और असत्य, क्रूरता आदि के प्रति अश्रद्धा पैदा कर दी है। अतः आज भी मानव संगठन का आधार सत्य, आदि मानवीय गुण है और असत्य क्रूरता आदि दानवीय गुण संघर्ष के आधार है।

कार्लमार्क्स ने जब यूरोप के औद्योगिक विकास का अध्ययन किया तो उसे डार्विन के सिद्धान्त ''योग्यतम की जीत'' के आधार पर ज्ञात हुआ कि मिल के मालिक उद्योगपति निर्बल मजदूरों का शोषण कर रहे हैं, अतः मार्क्स ने वर्ग संघर्ष को उन्नति का आधार बताया। किन्तु यह सर्वत्र लागू होने वाला सिद्धान्त नहीं है। यह मार्क्स के समय में अथवा कभी भी कहीं भी धनवानों द्वारा निर्धन मजदूरों का शोषण है। जैसे योग्यतम की जीत मानव संगठन का आधार नहीं बन सकता उसी प्रकार सदा सर्वत्र वर्ग संघर्ष भी मानव संगठन का आधार नहीं हो सकता।

यूरोप में अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का आधार ''उपनिवेशवाद'' को बनाया। इसी आधार पर अमेरिका, अफ्रीका, भारतवर्ष आदि देशों में अपने देश के उपनिवेश बनाये। उपनिवेशवाद का सिद्धान्त सभी देशों में संघर्ष का कारण बना। इन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर संसार में विश्वयुद्ध हुए। प्रथम विश्वयुद्ध और द्वितीय विश्वयुद्ध का आधार स्वार्थी राष्ट्रवाद बना।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद राष्ट्रों में मिलजुल कर रहने की भावना का थोड़ा सा उदय हुआ। इसका सुफल निकला संसार के राष्ट्रों ने लीग आफ नेशन्स का संगठन किया किन्तु इस राष्ट्र संघ का आधार मैत्री और समता नहीं था। इसका फल यह हुआ कुछ ही वर्षो में राष्ट्र संघ का यह संगठन बेकार हो गया और संसार ने विश्वयुद्ध का दूसरा नरसंहार का, अत्यन्त हृदयविदीर्ण करने वाला हिरोशिमा, नागाशाकी का एटम बम की विनाश लीला और हिटलर के गैस चेम्बर की अकल्पनीय विनाश लीला का अनुभव किया।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद संसार में शान्ति बनी रहे इसके निमित्त ''संयुक्त राष्ट्र संघ'' का संगठन किया। विश्वयुद्ध के कारणों का इतिहास कुछ अधिक सुस्पष्ट रूप से सामने था। अतः थोड़ी अधिक सूझ-बूझ, मैत्री और समता दिखायी पड़ती है। संयुक्त राष्ट्र संघ का क्षेत्र भी अधिक बड़ा बना। साधारण समिति, सुरक्षा परिषद, विश्व बैंक, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष आदि की भी संरचना की गयी। यह सभी संगठन थोड़े अधिक मैत्री और समानता के आधार पर बने हैं किंतु सब जगह कुछ राष्ट्रों की महिमा संगठन की निर्बलता का कारण बन रही है। अमेरिका अपनी दादागिरी बनाये रखना चाहता है। अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस, रूस, चीन का विशेषाधिकार- वीटो संगठन को निर्बल बना रहा है। यह राष्ट्र अपने स्वार्थ को अन्य देशों से बढ़कर मानते हैं। यह संगठन के लिए बड़ी भारी निर्बलता बन गया है।

विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष में अमेरिकन डालर का वर्चस्व सर्वोपरि बना रहता है। संसार की अन्य मुद्रायें रूपये आदि क्रय शक्ति के आधार पर नहीं है। विश्व बैंक या अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष विनिमय दर को विश्व के बाजार के आधार पर रखते हैं। जबकि विनिमय का आधार ''क्रय शक्ति की समानता'' होना चाहिए। यह असमानता की भावना और सुरक्षा परिषद आदि में वीटो संयुक्त राष्ट्र संघ की चिन्ताजनक निर्बलतायें हैं। ये निर्बलतायें विश्व संगठन के लिए आत्मघातक सिद्ध हो सकती है।

वैदिक आदर्शो के आधार पर समानता और सबका कल्याण, सारे विश्व का कल्याण काम्य है-

''सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुखःभाग् भवेत्।।''

भारतीय ऋषियों के चिन्तन में जनतंत्र का बहुमत नहीं था। वहाँ ऋषि सर्वसुख, सर्व कल्याण की भावना को प्रश्रय देते हैं।

वेद की दृष्टि में भूत मात्र से, प्राणिमात्र से मित्रता की कामना की गयी है-

''मित्रस्य मा चक्षषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।।''

अर्थात् हम प्राणी मात्र को मित्रता की दृष्टि से देखें और प्राणी मात्र हमें मित्र की दृष्टि से देखें। इस वैदिक सूत्र में केवल मनुष्य के प्रति मैत्री की भावना को अल्प समझा गया है। पशु-पक्षी संसार के सभी जीव-जन्तुओं को मैत्री की भावना से देखने की कामना है। यही मैत्री की भावना सभी राष्ट्रों में व्याप्त होकर संयुक्त राष्ट्र संघ जैसे विश्व संगठनों का आधार बनें।

संसार के राष्ट्रों के संगठन का आधार राष्ट्रों में समता की भावना है। यदि राष्ट्र आपस में छोटे राष्ट्र, बड़े राष्ट्र, बलशाली राष्ट्र, निर्बल राष्ट्र की भावना रखेंगे तो समानताहीन विश्व संगठन दोषपूर्ण और निर्बल हो जायेगा।

ऋग्वेद में विश्व नागरिक की अवधारणाः- वेदों के मर्मज्ञ विद्वान् स्वामी समर्पणानन्द जी (बुद्धदेव विद्यालंकार) ने एक अध्ययन प्रस्तुत किया है- ''ऋग्वेद का मण्डल-मणि-सूत्र।'' ऋग्वेद में दस मण्डल हैं। प्रथम मण्डल से दशम मण्डल तक एक विचारों की मणिमाला मिलती है। यह मणिमाला विश्व संगठन, विश्व शासन और विश्व नागरिक की अवधारणा को पुष्ट करती है। इस विश्व शासन, विश्व नागरिक और विश्व संगठन का आधार नागरिकों और राष्ट्रों में समानता है। ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त का तीसरा मंत्र विशेष रूप से समानता का उद्घोष करता है-

''ओं समानो मन्त्रः समितिः समानी,
समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः।
समानेन वो हविषा जुहोमि।।''

मंत्र का संक्षेप में भाव यह है कि सभी राष्ट्रों में समान विचार हो और संगठन की समितियों में समानता हो। सबके मन व चित्त में समानता हो। सभी राष्ट्रों में चिन्तन और विचार की समानता हो और सारे राष्ट्रों का प्राप्तव्य समानता के आधार पर हो।

यही मैत्री और समानता विश्व संगठन का सुदृढ़ आधार है।

सम्पर्क : ईशावास्यम्
पी-30 कालिन्दी हाऊसिंग एस्टेट
कोलकाता-700089

श्री माता प्रसाद त्रिपाठी दिवंगत

आर्य समाज जमुनिया बाग, फैजाबाद के संरक्षक श्री माता प्रसाद त्रिपाठी, भू.पू. प्रधानाचार्य राजकरण वैदिक इं.का. फैजाबाद का देहान्त कुछ कालिक अस्वस्थता के बाद स्थानीय एक अस्पताल में 22.11.14 को हो गया। उनकी आयु 83 वर्ष की थी उनका अन्त्येष्टि संस्कार गुरूकुल अयोध्या के प्रचार्य डॉ. नागेन्द्र शास्त्री एवं उनके ब्रह्मचारियों ने कराया। जिसमें भारी संख्या में आर्यजनों विद्यालय के शिक्षकगण एवं अन्य सम्भ्रान्त लोग शामिल हुये। शान्ति यज्ञ का आयोजन दि. 4.12.14 को स्थानीय आर्य समाज में किया जायेगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य मित्र परिवार की ओर से इस दुःख की घड़ी में शोक व्यक्त करते हुये परमपिता परमेश्वर से उनकी आत्मा की सद्गति एवं दुखी परिजनों को मनः शान्ति एवं धैर्य धारण कराने की प्रार्थना की गयी।

-विमल किशोर आर्य, लखनऊ

thearyasamaj.org

''महर्षि का जीवन प्रेरक एवं मार्ग दर्शक है''

मैंने पहले एक लेख आदरणीय डॉ. महेश जी विद्यालंकार की पुस्तक ''ऋषि दयानन्द की अमर गाथा'' शीर्षक से लिखा था। उस लेख में एक लेख और इसी पुस्तक से लिखने को लिखा था, सो दूसरा लेख इस भांति है-

ऋषिवर दया, करूणा और मानवता के सागर थे। वे सदा गाली देने वाले को फल व मिठाईयां, जहर देने वाले को क्षमा दान तथा विरोधियों को सम्मान देते थे। वे कभी अपने सुख-दुख के लिये न चिन्तित हुए और न रोये मगर देश, धर्म, जाति की दुर्दशा, नारी की दुर्गति और देश में फैले हुए अज्ञान, ढोंग, पाखण्ड पर निरन्तर व्यथित होते रहे और उसे दूर करने के लिए संपर्क करते रहे। उन्हें सदा यही पीड़ा व्यथित किये रहती थी कि भारत पुनः जगद्गुरू के गौरव पद पर कैसे प्रतिष्ठित हो? धर्म, भक्ति तथा परमात्मा के नाम पर फैली हुई मनगढन्त पोपलीलायें कैसे दूर हो, इन झूठे पाखण्डी गुरूओं, महन्तों, सन्तों आदि की इन भोली भाली जनता को बहकाने, ठगने की प्रवृत्ति पर कैसे विराम लगे? देश सत्यज्ञान एवं विद्या के प्रकाश से प्रकाशित होकर कैसे दुख, दैन्य, निर्धनता, रोग-शोक, पशुता आदि से मुक्त हो। ऋषि की मार्मिक पीड़ा यही रही हैं-

''इक हूक सी दिल में उठती है, इक दर्द जिगर में होता है,
हम रात को उठकर रोते है, जब सारा आलम सोता है।।

ऋषि सदा देश के दुर्भाग्य, दुर्गति, कलह, पतन एवं परस्पर की फूट पर रोये। जो देश कभी शान्ति,सुख, मानवता और धन धान्य का भण्डारी था। आज वह कितनी दीन-हीन अवस्था में है। यह पीड़ा उन्हें सदा बेचैन रखती थी। एक दिन प्रयाग में स्वामी जी गंगा के किनारे बैठे हुए प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द ले रहे थे, उन्होंने देखा कि एक माता मरा हुआ बच्चा हाथों पर उठाये हुए गंगा में प्रविष्ट हुई कुछ गहरे पानी में जाकर उसने बच्चे के शरीर पर लिपटा हुआ कपड़ा उतार लिया और रोते बिलखते हुए बच्चे को गंगा में प्रवाहित कर दिया। ऋषि इस हृदय विदारक दृश्य को देखकर अपने को संभाल नहीं पाये। वह करूणा स्वर में बोले- हाय हमारा देश इतना निर्धन हो गया है कि मृतक शरीर को कफन भी नहीं जुड़ता है, उनकी आंखों से आंसुओं की धारा बहने लगी। कभी यह भारत धन-धान्य, ऐश्वर्य और विभूतियों से भरा पूरा था। सोने की चिड़िया कहलाता था, आज देश की यह दयनीय दशा है? वे देश की निर्धनता तथा दुर्दशा पर घण्टों चिन्तन-मनन करते रहे।

ऋषि दयानन्द ने देश भर का भ्रमण किया, उन्होंने व्यक्तित्व, वाणी तथा लेखनी से सभी को प्रभावित किया। जिधर से निकले उधर ही वैचारिक क्रान्ति, सत्य तथा वेदानुकूल विचारों की छाप छोड़ते गये। अनेक राजे महाराजे, धनी मानी उनके शिष्य बन गये। बड़े बड़े धुरन्धर विद्वानों से उनके शास्त्रार्थ हुए। सभी उनकी विद्या, बुद्धि तथा तेज और बल से प्रभावित थे। उन्होंने दुनिया को झुकाया स्वयं नहीं झुके, दूसरो को बदला स्वयं नहीं बदले। जो भी उनके सम्पर्क में आया उसके विचारों और जीवन का कायाकल्प हो गया। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व में अद्भुत चुम्बकीय आकर्षण शक्ति थी। घोर शत्रु भी उनके सामने नतमस्तक हो जाते थे। वे दिव्य गुणों की खान थे। उनका सम्पूर्ण जीवन प्रेरक, आदर्श, शिक्षाप्रद और नव जीवन दायक था। उनके दिव्य जीवन से न जाने कितनों ने अपने जीवन संभाले और ऊपर उठे। प्रेरक घटनाओं, बातों और उपदेशों से इतिहास भरा पड़ा है। ऋषि का जीवन दर्शन हमारे लिए मील का पत्थर है।

भोगी विलासी दुर्व्यसनों में फंसे मुन्शीराम के जीवन को ऋषि के एक भाषण ने बदल दिया। उनके जीवन ने ऐसी करवट बदली कि वे मुन्शीराम से स्वामी श्रद्धानन्द बन गये। स्वामी श्रद्धानन्द ने देश, धर्म, जाति के लिए जो प्रेरक कार्य किये हैं वे हमेशा स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेंगे। यदि हम जीवन उत्थान, निर्माण तथा देश, धर्म, जाति आदि की सेवा का पाठ व शिक्षा लेना चाहे तो स्वामी श्रद्धानन्द से बढ़कर कोई प्रेरक न मिलेगा।

मुंशीराम की तरह ही अमीचन्द का जीवन भी बुराईयों तथा दोषों से भरा हुआ था। किसी सभा में ऋषिवर के प्रवचन से पूर्व उन्होंने भजन सुनाया। भजन बड़ा ही मधुर था। लोगों ने अमीचन्द के बारे में ऋषिवर को बता रखा था। सहज ही ऋषि की सत्य वाणी निकली- अमीचन्द तुम हो तो हीरा पर कीचड़ में फंसे हो। इस प्रेरक व प्रभावी वाक्य ने अमीचन्द के जीवन को बदल कर रख दिया। बाद में इसी अमीचन्द ने भजनों के माध्यम से आर्य समाज का बड़ा प्रचार व प्रसार किया। ऋषि की वाणी और नजर में एक अद्भुत जादू था, जो सिर चढ़कर बोलता था। मृत्यु का अन्तिम दृश्य, ऋषि की सहनशक्ति, आस्तिकता, प्रभुभक्ति, मृत्यु से निर्भयता आदि को देखकर नास्तिक गुरूदत्त आस्तिक बन गये। उनके विचार बदल गये। उन्होंने सारा जीवन ऋषि मिशन को समर्पित कर दिया।

पं. लेख राम ऋषि के जीवन और विचारों पर इतने दीवाने हुए कि सारा जीवन आर्य मुसाफिरी में गुजार दिया। ऋषि मिशन पर बलिदान होकर आर्यजनों को सन्देश दे गये कि तकरीर और तहरीर में काम बन्द न होने देना।

महात्मा हंसराज ने सारा जीवन सादगी, त्याग, सेवा और फकीरी में रहकर ऋषि मिशन को समर्पित कर दिया। ऋषि के जीवन चरित्र को देखकर न जाने कितने दीवाने, मस्ताने और जुनून वाले बनें हैं, उन सभी को स्मरण करना सीमित स्थान में संभव नहीं है। उन सभी के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं योगदान को स्मरण व नमन।

ऋषि के जीवन की अनेक प्रेरक घटनायें व बातें है जो आज के जीवन और जगत को संभालने, सुधारने व ऊपर उठने की शिक्षा व प्रेरणा देती है। स्वामी जी का जीवन खुली किताब था। उनकी कथनी और करनी एक थी। उन्होंने जो कहा वह कर दिखाया। प्रभु विश्वास तथा सत्य उनके जीवन का आधार था।

महर्षि दयानन्द ने जीवन भर गलत बातों, ढोंग, पाखण्ड, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, अंधविश्वास आदि से कभी समझौता नहीं किया। यदि किया होता तो वे उन्नीसवीं शताब्दी के सबसे बड़े भगवान होते। उनका व्यक्तित्व अद्वितीय गुणों तथा यौगिक सिद्धियों से परिपूर्ण था। मगर वे इतने महान व निरहंकारी थे, सदा साधारण मानव बनकर ही अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत किया। हम आर्यजन स्वार्थ, लोभ, पद आदि के लिए कदम कदम पर सिद्धान्त विरूद्ध बातों से समझौता करने को तैयार हो जाते हैं। असत्य बातों से आत्मा को पतित कर लेते हैं। हमें ऋषि के प्रेरक जीवन से शिक्षा व सत्य पालन का व्रत लेना चाहिए।

खुशहाल चन्द्र आर्य
180, महात्मा गांधी रोड़,
कोलकता- 700007
मोबाइल-9830135794

शंख शिव नाद

जिस मंदिर में, शंख बजना बंद हो जाये
वहां प्रलय आगमन, संकेत है इसका।
जहां ओम ध्वनि की गूँज न गूँजे,
वहां जलाग्नि विराजे, प्रमाण है इसका।
जहाँ राक्षस योनि का प्राणी जन्मे,
नित अंधकार की उलझन में उलझे।
समझो सर्वनाश तो होना ही है
है वही बली बस स्वयं को समझे
जब पाप कर्म से, नष्ट हो जाए दूषित
मिटते हैं पापी, प्रमाण है इसका।
जहां ओम .....
पाप जहां हर पल है पनपता
समझो पाप-पापी को खा जायेगा
समय रहते जब पापी न जागे
पुनः राक्षस योनि का योग बनायेगा
हृदयी 'सागर' से शंख विराजें,
सागर तट देखो प्रमाण है जिसका
जहां ओम .....

डा. बी.पी.सागर
अंतरंग सदस्य,
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र.

thearyasamaj.org

बृहदधिवेशन की सूचना

सभी पदाधिकारियों, प्रतिष्ठित, अन्तरंग सदस्यों, सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों/ प्रतिनिधियों एवं जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधियों/पदाधिकारियों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र. की वार्षिक साधारण सभा का अधिवेशन दिनांक 24 एवं 25 जनवरी, 2015 दिन-शनिवार एवं रविवार (माघ शुक्ल पक्ष चतुर्थी एवं पंचमी) को प्रातः 11 बजे से आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. लखनऊ के प्रधान-श्री देवेन्द्रपाल वर्मा जी की अध्यक्षता में आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. (नारायण स्वामी भवन), 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ में सम्पन्न होगा। एजेण्डा एवं विस्तृत कार्यक्रमों की रूप-रेखा सभी को डाक द्वारा भेजी जा रहा है। कृपया समय से उपस्थित होकर अधिवेशन को सफल बनायें।

-स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मंत्री

अन्तरंगाधिवेशन की सूचना

सभी पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. की अन्तरंग सभा की साधारण बैठक दिनांक 24 जनवरी, 2015 दिन-शनिवार माघ शुक्ल पक्ष चतुर्थी को प्रातः 11 बजे से आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. लखनऊ के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा जी की अध्यक्षता में आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. (नारायण स्वामी भवन), 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ में सम्पन्न होगी। एजेण्डा सभी को डाक द्वारा भेजा जा रहा है। कृपया समय से उपस्थित होकर अधिवेशन को सफल बनायें।

-स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मंत्री

अनुभवी वैद्य चाहिए

महर्षि दयानन्द स्मारक द्वारा संचालित कर्णवास, बुलन्दशहर में आयुर्वेदिक धर्मार्थ चिकित्सालय के लिए वैदिक धर्मी योग्य एवं अनुभवी वैद्य की आवश्यकता है।

-रघुराज सिंह आर्य

सोमेन्द्र सिंह राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा में उत्तीर्ण

महर्षि दयानन्द गुरूकुल महाविद्यालय पूठ (पुष्पावती) बहादुरगढ़ गाजियाबाद के स्नातक सोमेन्द्र सिंह ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (एन.ई.टी.) जून 2014 उत्तीर्ण की है। सोमेन्द्र सिंह की सफलता ने गुरूकुलीय शिक्षा प्रणाली में उत्साह का संचार किया है। उनकी सफलता पर गुरूकुल के संचालक स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने उनको आशीर्वाद प्रदान कर आगे बढ़ने का आशीर्वाद प्रदान किया है। सोमेन्द्र सिंह की सम्पूर्ण शिक्षा स्वामी धर्मेश्वरानन्द के श्री चरणों में ही सम्पन्न हुई हैं। इस सफलता पर गुरूकुल में उत्साह का माहौल बना रहा। सोमेन्द्र सिंह ने अपनी सफलता का श्रेय स्वामी जी को दिया तथा कहा कि उन्हीं के आशीर्वाद से ही यह सफलता प्राप्त की है। इससे पूर्व सोमेन्द्र सिंह सी.बी.एस.सी. द्वारा आयोजित राष्ट्रीय अध्यापक पात्रता परीक्षा दो बार एवं यू.पी.टी.ई.टी. उत्तीर्ण कर चुके हैं। वह लेखन के साथ साथ आकाशवाणी रामपुर से वार्ता भी प्रसारित करा चुके हैं। उनकी सफलता से गुरूकुल का शिक्षा क्षेत्र में गौरव बढ़ा हैं। सोमेन्द्र ने अपनी सफलता में अपने परिवार के श्री पंकज कुमार का आभार व्यक्त किया।

वल्लभ भाई पटेल से नेता बनो महान

पं. नन्दलाल निर्भय 'पत्रकार',
भजनोपदेशक

आज बताते हैं तुम्हें नेता की पहचान।
जिसमें ये गुण हैं उसे नेता लेना मान।।
नेता लेना मान, सत्य का जो अनुरागी।
देशभक्त, ईमानदार, तपधारी, त्यागी।।

वीर, साहसी, निडर, निबल, निर्धन का रक्षक।
ईशभक्त, गौभक्त, गुणी वह नेता लायक।।
वल्लभ भाई पटेल थे, ईश्वर भक्त महान।
देशभक्त धर्मात्मा, भारत की थे शान।।

भारत की थे शान, तपस्वी परोपकारी।
नेता थे गुणवान, साहसी, कर्मठ भारी।।
मानवता के पुंज, दया के वे थे सागर।
उनके यश के गीत, रहे हैं गा नारी-नर।।

प्यारे भारत देश में, था गोरों का राज।
पापी करते थे जुल्म, था तब दुखी समाज।।
था तब दुखी समाज, गए थे बढ़ अन्यायी।
गौ हत्या, नित यहां, कराते थे दुखदाई।।

तिलक, गोखले, विपिन पाल तब आगे आए।
स्वामी श्रद्धानन्द, लाजपत ना दहलाए।।
वल्लभ भाई पटेल ने, नहीं लगाई देर।
स्वतंत्रता संग्राम में निर्भय कूदा शेर।।

निर्भय कूदा शेर, किसी का खौफ न खाया।
गरजा शेर समान, विधर्मी राज हिलाया।।
कांप गये अंग्रेज, नहीं रण में टिक पाए।
भाग गए इंग्लैंड, भारती सब हर्षाए।।

फिर सरदार पटेल ने किया गजब का काम।
तीन सौ सरसठ रियासतें, कर दी एक समान।।
कर दी एक समान, देश मजबूत बनाया।
ऐसा नेता यहां न अब तक कोई आया।।

अगर जवाहर लाल नहीं रोड़ा अटकाता।
काश्मीर का रोग उसी दम ही मिट जाता।।
नरेन्द्र मोदी जी सुनो आप लगाकर ध्यान।
वल्लभ भाई पटेल से नेता बनो महान।।

नेता बनो महान, न दुष्टों से दहलाओ।
पापी पाकिस्तान, चीन का दम्भ मिटाओ।।
भारत माँ की शान, बढ़ाओ प्यारे नेता।
तरूणाई का जोश दिखाओ प्यारे नेता।।

●●●

thearyasamaj.org

आर्य मित
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०९४१२६७८५७१, मंत्री-०९८३७४०२१६२, सम्पादक-९५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

स्वामी दयानंद काशी शास्त्रार्थ का 145वाँ स्मृति दिवस समारोह में संगोष्ठी दयानंद ने वेद और वेदानुकूल मत को पुनर्प्रतिष्ठित किया

19वीं शती में विलक्षण सन्यासी दयानंद सरस्वती ने आदि शंकराचार्य काल के लगभग 2400 वर्षो के उपरान्त वेद और वेदानुकूल मत को पुनःप्रतिष्ठित किया और सनातन तत्वज्ञान से भटके लोगों को रास्ता दिखाया, संसार में पंथों, मजहबों और सम्प्रदायों में व्याप्त अज्ञान, अविद्या तथा पाखण्ड को खारिज कर उनकी कथित धार्मिक-दार्शनिक विवेचनाओं पर विमर्श और शास्त्रार्थ की चुनौती देते हुए सवालों की झड़ी लगा दी। उक्त विचार स्वामी दयानंद के ऐतिहासिक काशी शास्त्रार्थ के 145वें दिवस के अवसर पर मंगलवार को काशी आर्य समाज बुलानाला में आयोजित संगोष्ठी में मुख्य अतिथि श्री बेचन सिंह उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उ. प्र. ने व्यक्त किये।

मुख्य वक्ता डा. जय प्रकाश भारती पुस्तकाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य सभा, नई दिल्ली ने कहा कि सारा संसार पाश्चात्य विद्वानों की वेद विषयक भ्रान्त धारणाओं से आक्रान्त था, स्वामी दयानद ही थे, जिन्होंने वेद ज्ञान के मर्म को समझाया और सारी दुनिया के लोगों को वेदों की ओर लौटने का आह्वान कर त्रैतवाद की दार्शनिक क्रान्ति का प्रवर्तन किया।

विशिष्ट अतिथि श्री रमाशंकर आर्य पूर्व उप प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. ने बताया कि आतंकवाद के मूल में धर्मान्धता है, विज्ञान के युग में तर्कसंगत धार्मिक विश्वासों की आवश्यकता है।

काशी आर्य विद्वत परिषद के अध्यक्ष पं. ज्ञान प्रकाश आर्य ने कहा कि पुराणों में वर्णित अविद्यायुक्त बातों के साथ साथ जैन, बौद्ध, बाईबिल तथा कुरान द्वारा प्रतिपादित मतों की समीक्षा स्वामी दयानंद ने अपने कालजयी ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में की है।

पूर्व सभासद लीलाराम सचदेवा ने कहा कि दयानंद सरस्वती ने नर-नारी समानता और नारी सशक्तिकरण की जबरदस्त पैरवी की। आर्य विदुषी डा. गायत्री आर्य ने बताया कि स्वामी दयानंद ने दलितों और नारियों की शिक्षा का मार्ग प्रशस्त किया।

काशी आर्य समाज के प्रधान श्री नाथ सिंह पटेल की अध्यक्षता में आयोजित उक्त संगोष्ठी में प्रकाश नारायण शास्त्री, डा. विशाल सिंह, श्री शम्भू नाथ, श्री बृजभूषण सिंह, लालचंद आर्य, सत्यनिष्ठा आर्य, डा. ज्योत्सना गुप्ता ने भी विचार व्यक्त किये। श्री रमेश जी आर्य ने सुमधुर भजन प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का प्रारम्भ श्री मोती लाल आर्य के संयोजकत्व में सम्पन्न हुये वैदिक यज्ञ से हुआ। अतिथियों का स्वागत कोषाध्यक्ष डा. विशाल सिंह संचालन प्रकाश नारायण शास्त्री,

पुस्तक परिचय

पुस्तक का नाम	ऋषि दयानन्द का तत्व दर्शन
नामकरण	पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय द्वारा लिखित "फिलॉसफी ऑफ दयानन्द" का हिन्दी अनुवाद
अनुवादक	डॉ. रूपचन्द्र 'दीपक'
पृष्ठ / मूल्य	पृष्ठ-368 / तीन सौ रूपये मात्र
प्रकाशक	विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द
महत्वपूर्ण विषय	1. दयानन्द से वर्तमान - भविष्य दोनो लाभान्वित। 2. तथाकथित आधुनिक दर्शन मात्र 3000 वर्ष पुराना। 3. वैदिक दर्शन समृद्ध दशा में सहस्रो शताब्दी प्राचीन। 4. काशी शास्त्रार्थ का ऐतिहासिक दिन। 5. ऋषि दयानन्द का मानक दर्शन। 6. शंकराचार्य का आत्मसत्ता में विश्वास। 7. जैन तर्कशास्त्र - स्याद्वाद या सप्तभंगी। 8. व्यास का वेदान्त और शंकराचार्य का नवीन वेदान्त। 9. सी.ई.एम. जोड का द्वितत्व सिद्धान्त। 10. कपिल और दयानन्द की समता।

फूलचन्द्रः
(आचार्य फूलचन्द्र आर्य)

सेवा में,

.....

.....

.....

स्वास्य चर्चा-

लो ब्लड प्रेशर के घरेलू नुस्खे

50 ग्राम देशी चने व 10 ग्राम किशमिश को रात को 100 ग्राम पानी में किसी भी कांच के बर्तन में रख दें। सुबह चनों को किशमिश के साथ अच्छी तरह से चबा-चबा कर खायें और पानी को पी लें। यदि देशी चने न मिले तो सिर्फ किशमिश ही लें। इस विधि से कुछ ही सप्ताह में ब्लड प्रेशर सामान्य हो सकता है।

रात को बादाम की 3-4 गिरी पानी में भिगो दें और सुबह उनका छिलका उतार कर 15 ग्राम मक्खन और मिश्री के साथ खाने से लो ब्लड प्रेशर नष्ट होता है।

प्रतिदिन आंवले या सेब के मुरब्बे का सेवन लो ब्लड प्रेशर में बहुत उपयोगी होता है। आंवले के 2 ग्राम रस में 10 ग्राम शहद मिलाकर कुछ दिन प्रातः काल सेवन करने से लो ब्लड प्रेशर दूर करने में मदद मिलती है।

लो ब्लड प्रेशर को सामान्य रखने में चुकन्दर रस काफी कारगर होता है। रोजाना यह जूस सुबह शाम पीना चाहिए। इससे सप्ताह भर में आप अपने ब्लड प्रेशर में सुधार पायेंगे।

जटामासी, कपूर और दालचीनी को समान मात्रा में लेकर मिश्रण बना लें और तीन तीन ग्राम की मात्रा में सुबह शाम गर्म पानी से सेवन करें। कुछ ही दिन में आपके ब्लड प्रेशर में सुधार हो जायेगा।

जिस किसी को भी लो ब्लड प्रेशर की शिकायत हो और अक्सर चक्कर आते हों तो आंवले के रस में शहद मिलाकर चाटने से जल्दी आराम मिलता है। रात्रि में 2-3 छुहारे दूध में उबालकर पीने या खजूर खाकर दूध पीते रहने से निम्न रक्तचाप में सुधार होगा।

अदरक के बारीक कटे हुए टुकड़ों में नींबू का रस व सेंधा नमक मिलाकर रख लें। इसे भोजन से पहले थोड़ी थोड़ी मात्रा में दिन में कई बार खाते रहने से यह रोग दूर होता है। 200 ग्राम मट्ठे में नमक, भुना हुआ जीरा व थोड़ी सी भुनी हुई हींग मिलाकर प्रतिदिन पीते रहने से इस समस्या के निदान में पर्याप्त मदद मिलती है।

200 ग्राम टमाटर के रस में थोड़ी सी काली मिर्च व नमक मिलाकर पीना लाभदायक होता है। उच्च रक्तचाप में जहां नमक के सेवन से रोगी को हानि होती है वहीं निम्न रक्तचाप में नमक के सेवन से लाभ होता है।

गाजर के 200 ग्राम रस में पालक का 50 ग्राम रस मिलाकर पीना भी निम्न रक्तचाप के रोगी के लिए लाभदायक रहता है।

नींबू के पानी के साथ या सलाद आदि के साथ रोज खाने से इस समस्या से राहत मिलती है। लहसुन निम्न रक्तचाप के रोगियों के लिये बहुत ही लाभदायक होता है इसका नियमित सेवन करने से भी लो ब्लड प्रेशर की समस्या में आराम होता है।

वनौषधि माला से साभार

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।